

## सैनटिशन और स्टंटगि में अंतरसंबंध

### संदर्भ

- विकासशील देशों में स्टंटगि से ग्रस्त बच्चों (उम्र की तुलना में छोटे कद और कम वज़न वाले बच्चे) की प्रायः बड़ी तादाद देखने को मिलती है और भारत की भी यही कहानी है।
- वैज्ञानिकों का यह अनुमान है कि खुले में शौच (Open defecation) और अशुद्ध पानी के कारण बच्चे स्टंटगि के शिकार हो रहे हैं।
- गौरतलब है कि 'लैंसेट ग्लोबल हेल्थ रिसर्च' (Lancet Global Health research) की हालिया रिपोर्ट में सैनटिशन (स्वच्छता) और स्टंटगि के अंतरसंबंध को दर्शाया गया है।

### क्या है स्टंटगि?

- स्टंटगि कुपोषण का एक भीषणतम रूप है, जिसकी चपेट में आने वाले बच्चों का उनकी उम्र के हिसाब से न तो वज़न बढ़ता है और न ही उनकी लंबाई बढ़ती है।
- लगातार डायरिया जैसे रोंगों से संक्रमित रहने के कारण बच्चों को पर्याप्त मात्रा में पोषण नहीं मिल पाता है, जिसके कारण वे स्टंटगि के शिकार हो जाते हैं।
- गौरतलब है कि भारत में स्टंटगि से ग्रस्त बच्चों की संख्या सर्वाधिक है।

### स्टंटगि के नकारात्मक प्रभावों को इंगति करती विभिन्न रिपोर्टें





- **वर्ल्ड डेवलपमेंट रपॉर्ट, 2018**

- ▶ शिक्षा पर केंद्रित है विश्व बैंक की 'वर्ल्ड डेवलपमेंट रपॉर्ट 2018: लर्निंग टू रयिलाइज एजुकेशन प्रॉमिसि' से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर गरीबी और कुपोषण के दूरगामी प्रभावों की चर्चा की गई है।
- ▶ रपॉर्ट में बताया गया है कि कम-आय वाले देशों में पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में स्टंटिंग की दर समृद्ध देशों की तुलना में तीन प्रतिशत अधिक है। बचपन में स्टंटिंग के शिकार यानी अल्प-वृद्धि का प्रभाव वयस्कता में भी बना रहता है।

- **ग्लोबल हंगर इंडेक्स, 2017:**

- ▶ 'ग्लोबल हंगर इंडेक्स' की हालिया रपॉर्ट के अनुसार भारत में 'भूख' अभी भी एक गंभीर समस्या है। वदिति हो कि पिछले वर्ष ग्लोबल हंगर इंडेक्स में 97वें

स्थान पर रहने वाला भारत, वर्तमान रपिपोर्ट के अनुसार तीन पायदान नीचे खसिक कर 100वें स्थान पर पहुँच गया है।

► भुखमरी के मापन के लिये यह इंडेक्स जारी करने वाला अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान चार आधारों (आबादी में कुपोषणग्रस्त लोगों की संख्या, बाल मृत्यु दर, अल्प वकिसति बच्चों की संख्या और स्टंटिंग के शिकार बच्चों की तादाद) को चुनता है और उनके अनुपातिक मूल्यों का समेकन कर इंडेक्स जारी करता है।

- यूनसिफ रपिपोर्ट, 2016:

► यूनसिफ द्वारा जारी 'स्टाप स्टंटिंग इन साउथ एशिया' रपिपोर्ट में कहा गया है कि बच्चों के अंदर स्टंटिंग की समस्या वैसे तो वैश्विक स्तर पर देखी जा रही है, लेकिन दक्षिण एशिया इसका प्रमुख केंद्र है, जहाँ स्टंटिंग के शिकार 40 फीसदी बच्चे नविस करते हैं।

► भारत में वशिव के कुल स्टंटिंग से प्रभावित बच्चों के 33 फीसदी बच्चे हैं। इस रपिपोर्ट के मुताबकि दक्षिण एशिया में लगभग 64 मिलियन बच्चों में इस समस्या के पीछे मुख्य वजह खानपान में कमी अर्थात् पोषक तत्वों का अभाव है।

- 'लैसैट ग्लोबल हेल्थ रसिर्च' रपिपोर्ट:

► इस नई रपिपोर्ट में स्टंटिंग के पीछे पोषण की कमी की अवधारणा के उलट, सैनटिशन को मुख्य कारण बताया गया है।

► इस रपिपोर्ट में कहा गया है कि वाटर प्यूरफिकेशन (water purification), सैनटिरी लैट्रीन (sanitary latrines) और हैंड वाशिंग (hand-washing) यानी वाश (WASH) इंटरवेंशन, स्टंटिंग का एक बड़ा कारण है।

### क्यों महत्त्वपूर्ण है 'लैसैट ग्लोबल हेल्थ रसिर्च' रपिपोर्ट?

- इस रपिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि पानी, शौचालय एवं स्वच्छता का स्टंटिंग में और पोषण की कमी में महत्त्वपूर्ण योगदान है।
- रोचक तथ्य यह है कि बड़ी संख्या में कुपोषण के मामले खाने की कमी या फरि भोजन में पोषाहार की मात्रा की कमी की वजह से नहीं होते बल्कि खराब साफ-सफाई की व्यवस्था और उचित स्वास्थ्य व्यवहारों की कमी की वजह से देखने को मिलते हैं।
- साबुन से सही तरीके से हाथ न धोने, साफ पीने के पानी के अभाव आदि के कारण से संक्रमण होता है और डायरिया जैसी बीमारियाँ होती हैं।

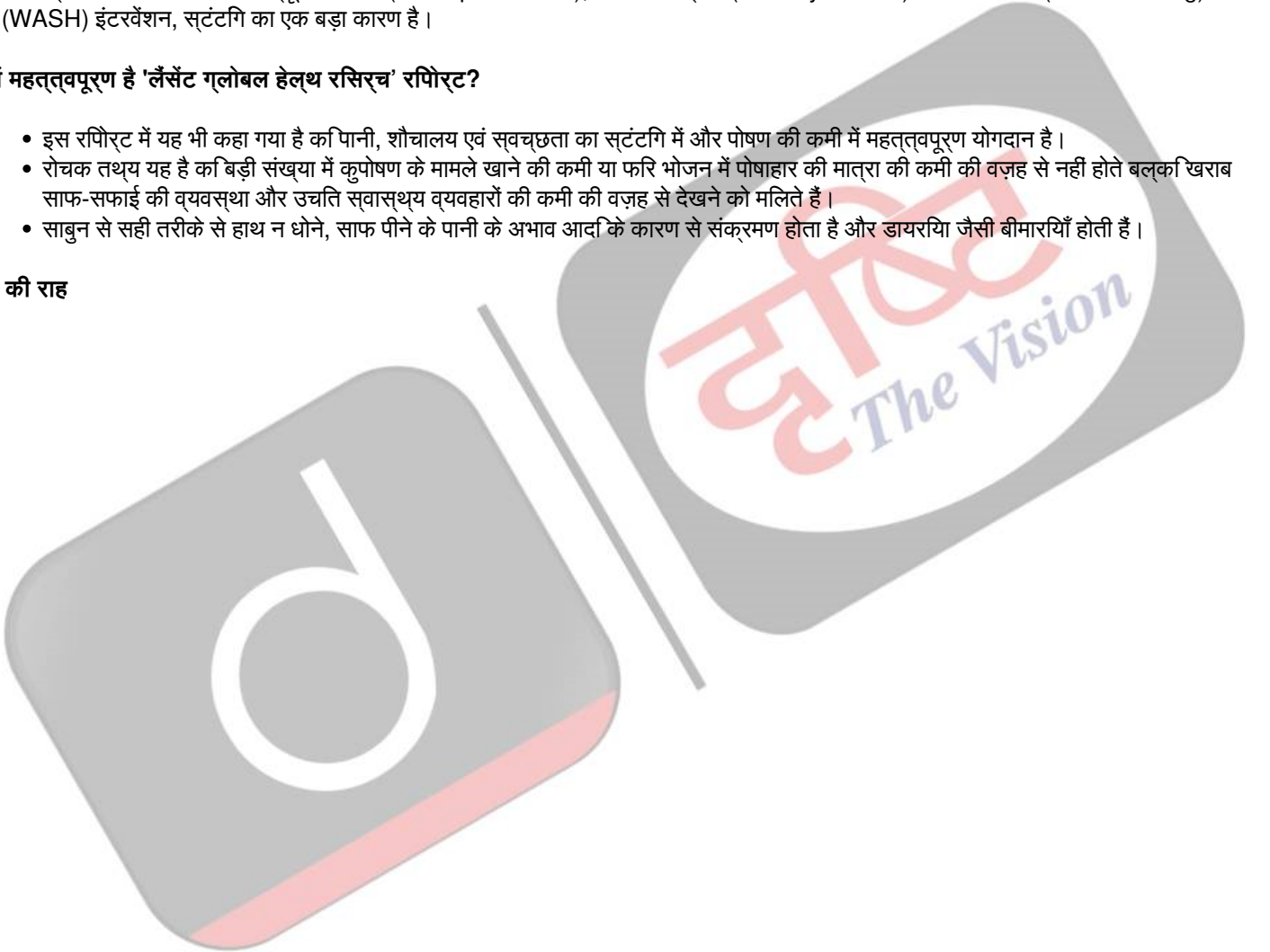
### आगे की राह

- वाश (WASH) इंटरनवेंसन को व्यापक बनाए जाने की आवश्यकता:

► वाटर प्यूरफिकेशन (water purification), सैनटिरी लैट्रीन (sanitary latrines) और हैंड वाशिंग (hand-washing) यानी वाश इंटरनवेंसन के संबंध में प्रयास किये जाने चाहिये।

- स्वास्थ्य व्यवहारों में सुधार की ज़रूरत:

► पोषण के वषिय में लोगों को जागरूक बनाना होगा साथ-ही-साथ उचित नीतियों के नरिमाण आदि के ज़रिये लोगों के अंदर स्वास्थ्य के संबंध में व्यावहारिक बदलाव ला सकते हैं।



- बुनयादी ढाँचा से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देने की ज़रूरत:

- भारत ने हाल के वर्षों में स्वच्छता को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। स्वच्छ भारत मशिन इस दशा में एक अच्छा कदम है।
- हालाँकि, स्वच्छता की ज़िम्मेदारी लोगों के स्वास्थ्य व्यवहारों के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती और इस संबंध में आवश्यक बुनयादी ढाँचों पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

### नषिकरष

- दरअसल, नवजात शशुओं या बच्चों में स्टंटगि का प्रभाव जीवन पर्यंत देखा जाता है साथ ही बच्चों की शारीरिक एवं तंत्रिका प्रणाली को ऐसा नुकसान पहुँचता है जो अपरविरतनीय होता है।
- बच्चों में स्टंटगि का प्रभाव न केवल उनके शरीर बल्कि दिमाग पर भी देखने को मलता है। ऐसे में न तो उनकी सामाजिक स्थिति मज़बूत हो पाती है और न ही आर्थिक स्थिति। ऐसे में भारत को स्टंटगि के वरिद्ध एक अभयान छेड़ना होगा।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/the-link-between-sanitation-and-stunting>

